Vol 4 Issue 6 Dec 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-6 | Dec-2014
Available online at www.aygrt.isrj.org

GRT

पूर्वाग्रह जनित भेदभाव - अनुसूचित जातियों के विशेष संदर्भ में

प्रतिभा राज

शोध छात्रा समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि., सागर(म.प्र.)

सारांश : पूर्वाग्रह मानव समाज में रूढियुक्तियों के आधार पर निर्मित धारणाऐं हैं,जो कि वर्ण, लिंग,भाषा,धर्म,जाति,प्रजाति,आदि अनेक संदर्भों में पायी जाती रहीं हैं। परंतु इसका दुष्परिणाम भेदभाव के व्यवहार के रूप में समाज के समक्ष प्रकट हुआ,जो कि समाज में संघर्ष,विघटन,एवं तनाव जैसे नकारात्मक प्रभावों का कारण बना।भारतीय समाज में अनुसूचित जातियों के संदर्भ में इस भेदभाव ने भयावह परिणाम प्रस्तुत किए हैं एवं समाज के इस वर्ग को दीर्घावधि तक उसके मानवाधिकारों से वंचित रखा है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था एवं आधुनिकीकरण के इस दौर में भी यह व्यवहार समाज में विद्यमान है तथा भारतीय समाज की एकता को हानि पहुंचा रहा है। इस प्रकार के व्यवहार में परिवर्तन हेतु व्यवहार को निर्देशित करने वाले विचारों में परिवर्तन ही लाभकारी परिणाम प्रस्तुत कर सकता है।

प्रस्तावनाः—

मानव समाज में अनेक विभिन्नताऐं पायी जाती हैं, जैसे धर्म, भाषा, जाति, प्रजाति, क्षेत्र, लिंग आदि इन विभिन्नताओं के आधार पर मानव समाज में अनेक सामाजिक समूह भी निर्मित हो जाते हैं एवं प्रत्येक समूह प्रत्येक अन्य समूह के व्यक्तियों के प्रति कुछ धारणाऐं निर्मित कर लेता है जो कि सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूप में हो सकती हैं। यही पूर्व धारणाऐं पूर्वाग्रह कहलाती हैं जिसे अंग्रेजी में च्तमरनकपबम कहा जाता हैं। च्तमरनकपबम लैटिन भाषा के शब्द च्तमरनकपबपनउ से बना है जिसका अर्थ 'न्याय की दृष्टि' से पूर्व निर्णय है। पूर्व निर्णय अर्थात् वह निर्णय जो बिना किसी तार्किक आधार के लिया गया है। जिसे ऑक्सफोर्स डिक्शनरी में 'Preconceived opinion, bias against in favour of person or thing' कहा गया है। G.W. Allport us 'The Nature of Prejudice' esa Prejudice को द्वेषपूर्ण एवं दृढ सामान्यीकरण पर आधारित एक विरोधी भाव माना है जिसे कि अनुभव एवं अभिव्यक्त किया जा सकता है। जेम्स ड्रेवर (1968) ने Dictionary of Psychology में पूर्व धारणा को एक संवेगात्मक अभिवृत्ति माना है जो कि, प्रतिकूल या अनुकूल होती है ।पूर्वाग्रहों को समाज में अनेक संदर्भों में देखा जा सकता है, यह किसी भी समूह, व्यक्ति, वस्तु ,सिद्धांत या विचार के प्रति अनुकूल एवं प्रतिकूल हो सकते हैं।

पूर्वाग्रह का स्वरूप -

इसे 3 पदों के आधार पर समझा जा सकता है -
(1) संज्ञानात्मक पक्ष (2) भावात्मक पक्ष (3) व्यवहारात्मक पक्ष

पूर्वाग्रह का संज्ञानात्मक पक्ष रूढ़ियुक्त (Stereotype) है जिसमें व्यक्तियों के एक समूह को कुछ विशेषताओं के आधार पर अलग कर लिया जाता है जैसे किसी जातीय या धार्मिक समूह को, यह एक त्रुटिपूर्ण वर्गीकरण करने वाली धारणा है। रूढ़ियुक्तियों का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति बाद में प्राप्त होने वाली सूचनाओं को रूढ़ि के अनुसार ही ग्रहण करता है और भ्रमात्मक सहसंबंधों का निर्माण करता है। पूर्वाग्रह के भावात्मक पक्ष में तीव्र सांवेगिक अनुभव जुड़ होता हैं एवं इसमें व्यक्ति या समूह का उनकी विशेषताओं के आधार पर धनात्मक एवं ऋणात्मक मूल्यांकन किया जाता है। पूर्वाग्रह का व्यवहारात्मक पक्ष पूर्वाग्रह के लक्ष्य व्यक्ति या समूह के प्रति ऋणात्मक प्रवृत्ति को व्यक्त करता है, पूर्वाग्रह का संबंध ऋणात्मक संवेगों या भावों से अधिक समझा जाता है। जब ये प्रवृत्तियाँ प्रकट व्यवहार के रूप में परिवर्तित होती हैं तो उसे भेदभाव कहा जाता है।

भेदभाव-पूर्वाग्रह परिणाम के रूप में -

भेदभाव पूर्वाग्रहों का व्यवहारात्मक पक्ष है, जिसका अर्थ उन व्यक्तियों (लक्ष्य समूह ,जिससे भेदभाव किया जा रहा है)के प्रति नकारात्मक क्रियाऐं, मनोवृत्ति का व्यवहार में रूपांतर होना है। जिसे समाज में अनेक रूपों में देखा जा सकता है जैसे वर्ण (काले एवं गोरे का भेद), लिंग (स्त्री एवं पुरुष का भेद), प्रजाति, भाषा (मृदु एवं कठोर कहकर), वेशभूषा, वर्ग, रोग (।प्क्ै आदि से पीड़ित रोगियों के साथ), संस्कृति, धर्म, जाति, क्षेत्र, आर्थिक

वर्गों के आधार पर, राजनीतिक दलों के संबंध में आदि पूर्वाग्रह ग्रस्त व्यक्ति दलित समूह के व्यक्तियों के साथ सामान्य बर्ताव नहीं करता, इस समूह को उन अधिकारों एवं लाभों से वंचित करने का प्रयास किया जाता है जो अन्य समूहों के सदस्य सामान्य रूप से प्राप्त करते हैं। यह व्यवहार भेदभाव के रूप में प्रकट होता है जो कि उग्र भी हो सकता है और नम्र भी। नर्म भेदभाव की तीन शैलियाँ प्रकट हैं ,जो हैं - (1) सहायता में अनिच्छा - इसमें लक्ष्य समूह (जिसे पसंद नहीं किया जाता) के सदस्यों की सहायता करने में अनिच्छा व्यक्त की जाती है। (2) नाममात्र की सहायता - इसमें लक्ष्य समूह की नाममात्र की सहायता की जाती है। (3) विलोमी भेदभाव - इसमें लक्ष्य समूह के प्रति अत्यधिक उदारता व्यक्त की जाती है। इन सूक्ष्म शैलियों के आधार पर भी भेदभाव व्यक्त किया जाता है।

पूर्वाग्रहों एवं भेदभाव को कई सामाजिक कारक प्रोत्साहित भी करते हैं- जैसे

- सामाजीकरण के माध्यम से परम्परा के आधार पर चली आ रही रूढ़ियाँ, पूर्वाग्रहों का निर्माण नयी पीढ़ी (बच्चों) में भी करती हैं।
- अपने समूह की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए भी व्यक्ति पूर्वाग्रहों को स्वीकार कर लेता है एवं अन्य समूह के प्रति भेदभाव प्रदर्शित करने लगता है।
- जब विभिन्न समूह परस्पर समान लक्ष्य या किसी आर्थिक लाभ हेतु प्रतियोगिता की स्थिति में होते हैं, तब इस दौरान पूर्वाग्रहों एवं भेदभाव को प्रोत्साहन मिलता है।
- रूढ़िवादी मानसिकता से प्रेरित व्यक्ति या समूह स्वयं के प्रभुत्व के प्रति असुरक्षा अनुभव करते हैं एवं पूर्वाग्रहों एवं भेदभाव को बढ़ावा देते हैं जिससे उनका वर्चस्व बना रहे।
- एक समूह जब स्वयं की संस्कृति एवं आदर्शों को मूल्यांकन द्वारा अन्य समूहों की संस्कृति एवं आदर्शों से श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहता है, तब पूर्वाग्रह एवं भेदभाव जैसे विचार एवं व्यवहार प्रोत्साहित होते हैं।
- व्यक्ति समूहों का वर्गीकरण अपने समूह एवं पराऐ समूह के रूप में करता है एवं अपने समूह के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति एवं पराऐ समूह के प्रति ऋणात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित करता है।
- समाज में शक्ति, संसाधनों की उपलब्धता, प्रतिष्ठा के लिए समूहों में संघर्ष होता हैं, यह संघर्ष लक्षित समूहों को दबाने हेतु पूर्वाग्रहों एवं भेदभाव को प्रेरित करता है।
- व्यक्ति अपने समूह को अन्य समूह से सापेक्षित रूप से वंचित स्थिति में देखता हैं तो यह स्थिति समाज में संघर्ष एवं भेदभाव को बढ़ावा देती हैं।
- पूर्वाग्रह का कारण सामाजिक वातावरण में व्याप्त कुंठा भी होती है।
- विभिन्न सूचना संसाधन भी पूर्वाग्रहों के निर्माण को प्रोत्साहित करते हैं।
- पूर्वाग्रह सामाजिक प्रक्रमों की उपज है। व्यक्ति अपने समूह के आदर्शों से अनुरूपता
- प्रदर्शित करता है एवं उन्हीं से यह विचार एवं व्यवहार ग्रहण करता है जो उसे अन्य के प्रति रखना एवं प्रकट करना है।

पूर्वाग्रह एवं भेदभाव के बीच का संबंध व्यवहार एवं अभिवृत्ति का है। पूर्वाग्रह एक बंद संज्ञानात्मक पाश का निर्माण करता है जो तर्क एवं सत्य पर आधारित नहीं होता। इसी संज्ञान से प्रेरित व्यवहार भेदभाव के रूप में प्रकट होता है। जिसे सामाजिक संरचना में व्याप्त कारक तथा व्यक्तिगत कारक जैसे विफलता जनित कुंठा का आक्रामकता के माध्यम से प्रदर्शन, आर्थिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का लाभ प्राप्त करने हेतु, जैसे जिन श्वेत लोगों ने अमेरिकी सरकार की अलगाव को समाप्त करने की नीति का विरोध का फैसला किया, इनमें से अधिकांश ऐसे लोग थे जिनका व्यवसाय व आर्थिक स्थिति भिन्न थी। ऐसे व्यक्ति यह सोचते हैं कि पूर्वाग्रह और भेदभाव रखने से उन्हें अपेक्षाकृत अधिक आर्थिक एवं सामाजिक लाभ मिलेगा इस प्रकार अनेक वैयक्तिक एवं सामाजिक कारक हैं जो भेदों एवं विभिन्नताओं के प्रति नकारात्मक भाव उत्पन्न करके उसे भेदभाव रूपी व्यवहार के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं। जैसा कि द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी एवं जर्मन नियंत्रित क्षेत्रों में thvl (Jewish) लोगों को अलग से चिन्हित होने या पहचाने जाने के लिए येलो स्टॉर्स पहनने पड़ते थे तथा बाद में उन्हें नाजियों द्वारा बवदबमदजतंजपवद बंउचे में भेजा गया। साउथ अफ्रीका में अश्वेत व्यक्तियों मतदान के अधिकार से वंचित रखा गया था तथा उन्हें एक अलग समुदाय के रूप में निवास करना पड़ता था। पश्चिमी देशों में महिलाओं को कार्यस्थल पर पुरुषों की तुलना में कमतर समझकर भेदभाव प्रदर्शित करने जैसे तथ्य सामने आते हैं जैसे समान कार्य के लिए उन्हें कम वेतन देना आदि। ऐसे अनेक प्रकार के भेदभाव जाति, धर्म, रंग, प्रजाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर किए जाते हैं और समाज में विभिन्न समूहों के बीच सामाजिक दूरी को बढ़ावा देते हैं और सामाजिक एकता को खंडित करते हैं।

अनुसूचित जातियों के विशेष संदर्भ में -

भारतीय समाज में पूर्वाग्रहों एवं भेदभावों को अनेक रूपों में देखा जा सकता हैं क्योंकि धर्म, भाषा, जाति, प्रजाति, क्षेत्र, भाषा, संस्कृतियाँ जैसे अनेक विभिन्नताऐं भारतीय समाज में विद्यमान एवं विभिन्नताओं या भेदों के प्रति पूर्वाग्रह एवं भेदभाव भी समाज में प्रदर्शित होते हैं। परंतु इन समस्त विभिन्नताओं में से एक, जाति भारतीय समाज की संरचना का अभिन्न अंग, यह एक व्यवस्था के रूप में भारतीय समाज में विद्यमान है एवं इस व्यवस्था ने अपने विभिन्न आदर्शों के माध्यम से स्वयं की निरंतरता को बनाए रखा है। विभिन्न जातियों का पवित्रता एवं अपवित्रता के आधार पर स्तरीकरण एवं समाज में शक्ति, सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा, अधिकारों का स्तरीकरण के क्रम में उच्च से निम्न की ओर वितरण इन्हीं आदर्शों के माध्यम से सम्पन्न हुआ एवं सामाजिक वैधता प्रदान की गयी। इस व्यवस्था में सर्वाधिक निम्न स्थिति प्राप्त अनेक सामाजिक निर्योग्यताओं से युक्त निम्न जातियाँ निम्न एवं दयनीय स्थिति में पहुँच गईं,अतः जिनके उत्थान हेतु स्वतंत्रता पश्चात् उन्हें संविधान द्वारा अनुसूचित किया गया एवं ये निम्न जातियाँ अनुसूचित जातियाँ कहलाने लगीं। भारतीय समाज में इन जातियों को अपवित्र एवं घृणित माना गया है। इनके स्पर्श को वर्जित एवं इनकी छाया को अशुभ व मलीन घोषित कर दिया गया है। जी.एस. घुरिऐ ने 'कास्ट क्लास एण्ड ऑक्युपेशन' में इनके संबंध में बताया है कि इस समूह के सदस्यों को मानवीय तथा अधिकारिक दृष्टि से न तो उच्च जातियों से सेवा प्राप्त करने की अनुमति थी और न ही वे कुछ विशिष्ट सेवा प्रदान करने वाली निम्न जातियों जैसे नाई, धोबी, तेली इत्यादि से किसी प्रकार की सेवाएं प्राप्त कर सकते थे। विभिन्न सार्वजनिक सुविधाओं जैसे - कुओं, सड़कों तथा जलमार्गों के प्रयोग से वंचित होने के साथ-साथ उच्च जातियों के मंदिरों, धर्मशालाओं, शैक्षणिक संस्थाओं, होटलों में प्रवेश पर भी प्रतिबंध था। कीमती वस्त्र एवं आभूषण के पहनने, उच्च जातियों के साथ

उठने-बैठने, बातचीत करने की रोक आदि के कारण ये समाज से कटे रहते थे तथा इनके निवास सामान्यतः शमशान घाटों के निकट तथा मुख्य ग्रामों से बाहर हुआ करते थे। ये जातियाँ हिंदू सिद्धांतानुसार चार प्रकार के वर्ण धर्माबद्ध समाज की पाँचवी श्रेणी है। है। ये सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक दृष्टि में पतित, अप्रगतिशील अस्पृश्य तथा अदर्शनीय हिंदू जातियाँ थी।ये जातियाँ समस्त अमानवीय निर्योग्यताओं एवं सम्पूर्ण समाज की घृणा एवं अवमानना की अधिकारिणी मानी गयीं क्योंकि इन्हें भारतीय समाज में अपवित्र माना जाता रहा है एवं इनके संबंध में इसी प्रकार की धारणाऐं सम्पूर्ण समाज में व्याप्त रहीं एवं इन से उच्च स्थिति प्राप्त सभी जातिय समूह के व्यक्ति इन्हें घृणित मानने लगे और यह धारणा भारतीय समाज में दीर्घावधि से उपस्थित रही है एवं इसने 'रूढ़ि' का रूप ग्रहण कर लिया है जिसे कि किम्बाल यंग ने हैण्डबुक ऑफ सोशल सायकोलॉजी (1960)में एक गलत युक्ति वर्गीकरण करने वाली धारणा माना है जिसके साथ पसंद, नापसंद, स्वीकृति या अस्वीकृति की कोई प्रबल संवेगात्मक भावना संबंधित रहती है। अनुसूचित जातियों को अपवित्र मानकर उनके संबंध में निर्मित रूढ़ियों ने अनुसूचित जातियों के प्रति नापसंदगी एवं अस्वीकृति की तीव्र संवेगात्मक भावना का निर्माण किया, जो कि अन्य जाति के समूह के व्यक्तियों द्वारा भेदभाव के व्यवहार के रूप में प्रकट हुई, जिसका की सामाजीकरण द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रसार हुआ एवं इस प्रकार के व्यवहार की निरंतरता बनी रही जिसने अनुसूचित जातियों के व्यक्तियों को समाज से बहिष्कृत कर शोषित अमानवीय एवं घृणित जीवन जीने के लिए बाध्य कर दिया। उनके साथ इस सामाजिक भेदभाव को आदर्शों के माध्यम से सामाजिक वैधता प्रदान कर दी गयी थी ।। इन सामाजिक आदर्शों ने पूर्वाग्रहों एवं भेदभाव को प्रभावित किया हैं। भारतीय समाज के इस प्रकार के सामाजिक आदर्शों को अनुसूचित जातियों ने भी ईश्वरीय आज्ञा समझकर स्वीकार कर लिया एवं इस सामाजिक भेदभाव के प्रति कोई विशेष विरोध प्रदर्शित नहीं किया। पूर्वाग्रहों से प्रेरित भेदभाव का सर्वाधिक दुष्परिणाम लक्षित समूह (जिससे भेदभाव किया जा रहा है) के सदस्यों के आत्मगौरव का हनन हैं, जिस कारण वे इस नकारात्मक व्यवहार को स्वयं के प्रति न्यायोचित मानकर, इसे बढ़ावा देते हैं एवं स्वयं के विकास एवं परिस्थितियों में परिवर्तन का प्रयास नहीं करते।

भारतीय समाज में इन जातीय पूर्वाग्रहों से प्रेरित व्यवहार ने ही विभिन्न जातियों में सामाजिक दूरी को जन्म दिया,सभी जातियों के लोग ब्राह्मणों से अंतःक्रिया करना चाहते थे,अतः ब्राह्मणों से सामाजिक दूरी अपेक्षाकृत कम थी परंतु अनुसूचित जातियों से सर्वाधिक थी। समाज में उच्च जाति वालों के प्रति धनात्मक और अनुसूचित जातियों के प्रति ऋणात्मक रूढियुक्तियों से ऐसा प्रतीत होता है कि रूढियुक्तियां तथा विभिन्न जाति के लोंगों के साथ संबधेां का निर्माण परस्पर संबंधित है। इन्हीं रूढियुक्तियेां को स्वीकार कर अनुसूचित जातियों में स्वयं के प्रति नकारात्मक अभिवृत्तियों को स्वीकार कर लिया एवं उनका जाति के प्रति प्रत्यक्षीकरण उच्च जाति के प्रत्यक्षीकरण के समान ही हो गया और परस्पर व्यवहार एवं संबधों को ये रूढियुक्तियां निर्देशित करने लगीं जिन्हें व्यक्ति सामाजीकरण के माध्यम से सीखता है। तिवारी (1986) ने अपने अध्ययन में बताया कि जाति एवं धर्म की चेतना आयु के साथ बढती है तथा प्रत्येक जाति के प्रति नकारात्मक एवं सकारात्मक मूल्य भी बढता है।परांजपे (1970) ने पूना नगर में ब्राह्मण, मराठा तथा हरिजन जातियों के विद्यार्थियों और रूढ़ियों का अध्ययन किया। इसके परिणामों से स्पष्ट हुआ कि कर्म और पुर्नजन्म के सिद्धांत में विश्वास की प्रवृत्ति उच्च जाति के छात्रों में अधिक थी। विभिन्न जातियों के विद्यार्थियों के बीच पारस्परिक संबंध कम मात्रा में थे। इन्हीं के कारण ब्राह्मणों ने तथा हरिजनों के बीच सर्वाधिक सामाजिक दूरी थी। प्रत्येक जाति के सदस्यों ने अपने बारे में अधिक धनात्मक अभिवृत्ति और पराऐ समूह के प्रति ऋणात्मक अभिवृत्ति थी। ब्राह्मणों को बुद्धिमान, शिक्षित, धार्मिक और शुद्ध कहा गया मराणों को वीर उधमी, देशभक्त,आत्मसम्मानी तथा उदार कहा गया। हरिजनों को गरीब, गंदे, अशिक्षित और पिछड़ा कहा गया। जातीय लगाव का सामाजिक अंतःक्रिया पर क्या प्रभाव पड़ता है यह अभिवृत्ति, पुनर्बलन एवं जाति संयुक्त रूप से अर्न्तवैयक्तिक आकर्षण को प्रभावित करती है।

उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर यह समझा जा सकता है कि विभिन्न जाति समूहों विशेषकर निम्न एवं हरिजन जातियों के प्रति निर्मित नकारात्मक अभिवृत्तियों पूर्वाग्रहों में इनके प्रति सामाजिक :भेदभाव को उग्र एवं नम्र दोनों ही रूपों में विकसित किया एवं अस्पृश्यता इसका सर्वाधिक अमानवीय उदाहरण है,। डॉ. पूरणमल ने भी 'दलित संर्घष एवं सामाजिक न्याय' में भारतीय समाज में क्रमिक असमानता,अन्याय,भेदभाव,अत्याचार व शोषण की उपस्थिति व्यक्त की है जिन्हें नैतिक नियमों एवं धर्मग्रथें में सही ठहराया गया। इन भेदभाव मूलक व्यवस्थाओं को धर्म,राजसत्ता एवं समाज तीनों का समर्थन तथा संरक्षण भी प्राप्त था। उग्र भेदभाव,हत्या,बलात्कार,आर्थिक संपत्ती को हानि, मारपीट ,हिंसा के अनेक रूपा में समाज में दिखाई देता है। अनुसूचित जाति के साथ इस प्रकार के अत्याचार के मामले भारत के अनेक राज्यों जैसे उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, केरल, राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरात आदि में अधिकांशतः दिखाई देते रहे है एव इस भेदभाव का नम्र रूप समाज में सवर्त्र व्याप्त रहा है,जिससे महिलाओं एवं बच्चों को भी पीडित होना पडा,जैसे अनुसूचित जाति के बच्चों के साथ विद्यालयों में शिक्षा एवं भोजन के दौरान भेदभाव जैसे तथ्य समाज के समक्ष प्रकट होते रहते हैं।महिलाओं को तो दोहरे स्त्री होने के कारण एव अनुसूचित जाति की होने के कारण दोहरे भेदभाव का शिकार होना पडता है क्योंकि ये दोनो ही स्थितियां भारतीय समाज में दलित हैं।

भेदभाव ने इन्हें समाज की अन्य जातियों से सामाजिक दूरी बढ़ाई, साथ ही विभिन्न सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक लाभों को प्राप्त करने हेतु इन्हें निर्योग्य घोषित कर दिया, और यह समस्त प्रक्रियाऐं दीर्घकालीन समय तक समाज में निरंतर चलती रहीं और भारतीय समाज एवं इसके सदस्यों में अचेतन रूप से कार्य करने लगीं। जिसका प्रभाव यह हुआ कि इन निम्न जातियों का इनके सदस्यों का वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास अवरूद्ध हो गया और समाज में इनका हाशियाकरण हो गया एवं वे नकारात्मक अभिवृत्तियाँ, पूर्वाग्रह जो अन्य जातियों द्वारा अनुसूचित जातियों पर आरोपित की गयी थी अनुसूचित जाति के सदस्य इन नकारात्मक अभिवृत्तियों को स्वयं के प्रति भी अनुभव करने लगे और स्वयं भी स्वयं के प्रति पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो गए। दीर्घकालीन चली इस पुर्वाग्रह एवं भेदभाव के सामाजिक व्यवहार ने उन्हें अनेक नकारात्मक अभिवृत्तियों जैसे हीनभावना, कुंठा, आक्रमकता, आक्रोश जैसी मानसिक दुर्बलताओं को भी जन्म दे दिया वर्तमान में शिक्षा, संवैधानिक प्रावधानों, संरक्षण, मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता के इन्हें अधिकार एवं विशेष अधिकारों के माध्यम से इनकी सामाजिक स्थिति को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है परंतु पूर्वाग्रह रचित भेदभाव की उग्र (हिंसा, अपराध, आर्थिक एवं सामाजिक अन्याय) एवं नम्र प्रवृत्ति जैसे असहयोग, विपरीत विभेदीकरण, स्वयं हीनभावना के रूप में आज भी समाज में परिलक्षित होती हैं।

पूर्वाग्रहों तथा भेदभाव से निराकरण- कम करने के उपाय -

समाज एवं व्यक्ति दोनों ही स्तरों पर पूर्वाग्रह मानवहितों को आघात पहुँचाता है इनके प्रभाव के फलस्वरूप अनावश्यक मनमुटाव, वैमनस्य

और लड़ाई-झगड़े पैदा होते है और विकराल होने पर यह हिंसा, युद्ध और अत्याचार का कुत्सित रूप ले लेता है और देश और समाज के पतन का कारण बन जाता है।

पूर्वाग्रह कुछ विशेषताओं के आधार पर एक समूह द्वारा दूसरे समूह के प्रति सकारात्मक एवं नकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण है। जो कि धनात्मक एवं ऋणात्मक मूल्यांकन पर निर्भर करता है। प्रायः पूर्वाग्रह को ऋणात्मक मूल्यांकन का पर्यायवाची माना जाता है। इस मूल्यांकनों के आधार पर किया गया व्यवहार भेदभाव के रूप में समाज के सामने आता है, इस प्रकार का व्यवहार एक समूह के द्वारा दूसरे समूह के साथ किया जाता है। ये परस्पर मानवीय क्रियाऐं अनेक अर्थों में अतार्किक प्रतीत होती हैं जिन्हें भ्रांत तकों के माध्यम से तर्कसंगत ठहराने को प्रयास किया जाता है।ये क्रियाऐं तर्क से नहीं बल्कि एक विशिष्ट मानसिक अवस्था से उत्पन्न होती हैं। इसी लिए उस क्रिया को करने वाला उस क्रिया के पक्ष में अनेक युक्तियाँ पेश करता है तथा उसे उचित प्रमाणित करने का प्रयत्न करता रहता है। मानव की भेदभाव रूपी मानवीय क्रिया भी इसी प्रकार की एक अतर्कसंगत मानवीय क्रिया है जो कि पूर्वाग्रहों से प्रभावित ऋणात्मक अभिवृत्तियों वाली मानसिक अवस्था द्वारा अभिव्यक्त होती है, जिसे पूर्वाग्रहों को निर्मित करने वाली धारणाओं या रुढ़ियों को भ्रांत तर्क के माध्यम से तर्क संगत ठहरा कर तार्किक सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है। जैसे कि अनुसूचित जातियों के सदस्यों के साथ सामाजिक सहवास संबंधी निषेध आर्थिक एवं व्यक्तिगत प्रतिबंध जो कि इन्हीं पूर्वाग्रहों द्वारा निर्मित एक विशिष्ट मानसिक की ही उपज है क्योंकि पूर्वाग्रह चेतन एवं अचेतन दोनों प्रकार से सक्रिय होते हैं परंतु अधिकांशतः अचेतन होते है। अनुसूचित जातियों से संबंधित निषेधों एवं भेदभाव को प्रमाणित सिद्ध करने के लिए ईश्वरीय आज्ञा से लेकर पौराणिक गाथा तक का सहारा लिया जाता है, एवं अनेक भ्रांत तर्कों का निर्माण भी व्यक्तियों एवं समूहों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार का पूर्वाग्रहों द्वारा निर्मित भेदभाव रूपी अतार्किक व्यवहार वैयक्तिक एवं सामाजिक विघटन को जन्म देता है।

पूर्वाग्रह समाज में जन्मता और यह सराहा जाता है यह दो समूहों के मध्य मूल्यांकन के आधार पर निर्भर करता है और भेदभाव रूपी व्यवहार को जन्म देता हैं। और यह सम्पूर्ण गतिविधियां व्यवहार समाज के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न होती है । इस क्रिया में व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा लगाए गए व्यक्तिनिष्ठ अर्थ, दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों द्वारा प्रभावित होते हैं एवं उसी के अनुसार गतिविधि निर्धारित होती हैं। पूर्वाग्रह समूह के सदस्यों द्वारा निर्मित होता है एवं यह व्यक्ति के व्यक्तिनिष्ठ अर्थ एवं व्यवहार को प्रभावित करता है, एवं इसमें व्यक्तिपरक समझ अत्यन्त महत्वपूर्ण है भेदभाव रूपी सामाजिक क्रिया एवं पूर्वाग्रहों को समाप्त या कम करने हेतु व्यक्ति के व्यक्तिपरक अर्थ ने तार्किकता को प्रोत्साहित करना लाभदायक सिद्ध होगा इस संबंध में हसरेल के ऑनटोलॉजी ऑफ द लाइफ वर्ल्ड के विचारों से सहायता प्राप्त की जा सकती है जो कि उन्होने अपने घटना क्रिया विज्ञान के सिद्धांत को व्यक्त करते हुए अपनी कृतियों फिनोमेनोलॉजी एण्ड क्राइसिस ऑफ वेर्स्टन फिलॉसफी एवं आइडियास जनरल इन्ट्रोडक्सन टू प्योर फिनोमेनोलॉजी में प्रस्तुत किया। हसरेल का मानना है कि मनुष्य जिस जीवन जगत से संपर्क स्थापित करता, पहले तो यह की मनुष्य जीवन जगत को वह भी जैसा है मानकर चलता है यह जीवन जगत मनुष्य के सोच और गतिविधियों को निर्धारित करता है। जैसे पूर्वाग्रहों के संदर्भ ने देखा जा सकता है कि मनुष्य को समूह के जीवन जगत के विचार एवं व्यवहार जा अन्य व्यक्तियों एवं समुहों के प्रति है उन्हें ग्रहण कर लेता है, मनुष्य की सोच एवं गतिविधियों इन्हीं पूर्वाग्रहों जो उसने अपने जीवन जगत से सीखी हैं प्रभावित हो जाती है।

हसरेल मानते है कि जीवन जगत से संपर्क की दूसरी विशेषता यह है कि मनुष्य जब इस जीवन जगत को देखता है तो उसका यह देखना उसके स्वयं की चेतना के अनुभव पर निर्भर हैं मस्तिष्क में चेतना की जो प्रक्रियाऐं है और जिनके द्वारा बाह्य वास्तविकताओं को जाना जाता है। हसरेल मानते है कि यदि हम जीवन जाग्रत को भूल जाऐं और हमारे इर्द-गिर्द की दुनियों को केवल इन्द्रियों के माध्यम से समझे तो तभी हमें वास्तविकता को समझने की अंतदृष्टि मिलेगी एवं इसी प्रकार से हम जीवन जगत में व्याप्त सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों को दूर कर जीवन जगत के प्रति तार्किक एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे एवं भेदभाव से दूर रह सकेंगे।

परन्तु व्यक्ति और समझ में चेतना की इस प्रक्रिया को प्रोत्साहन देने हेतु हमें सामाजीकरण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हैं ।इसके साथ अनंत सामूहिक संपर्क से विभिन्न समूहों के व्यक्तियों को एक दूसरे को जानने समझने का अवसर मिलता है जिससे उनमें एक दूसरे को स्वीकार करने की प्रवृत्ति बढ़ती हैं,स्टीफन(1985)मानतें है कि संपर्क से निराधार रूढियुक्तियां खण्डित होतीं हैं। विभिन्न प्रचार माध्यमों एवं शिक्षा द्वारा मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहित करने एवं नैतिकता एवं तार्किकता को प्रोत्साहित करने एवं भेदभाव के शिकार व्यक्तियों में आत्मगौरव बढ़ाने का प्रयास करके इस संबंध में सहायता मिल सकती है एवं भारतीय समाज में अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को उनकी जातिगत पहचान से अलग एक मानव के रूप में स्वीकार करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल सकता है।

संदर्भ ग्रंथः-

1. Allport gardan,1954,Nature of prejudice,cambridge M.A.: Addision-Wesley
2. Sinha,D.(ed)(1981),Socialization of indian child,New Delhi:Concept Publishing company
3. Paranjpe,A.C.(1970),Caste prejudice and the individual,Bombay:Lalvani publishingh House
4. Stephan,W.G.91985) Intergroup relation in G. lindzey E. Aronson (eds) Handbook of social psychology,Newyork Random House
5. Tiwari,R.K.(1986),caste and religious aweaeness among children,Agra:National psychological corporation
6. Dr.poranmal,dalit sangharsh aur samajiknyay,awishkar publishersdistributers,jaipur
7. G.S.Ghuriye,caste class and occupation,populer prakashan mumbai

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org